Que→ सल्तनत कालीन इतिहास के अध्ययन के स्त्रोतों के अध्ययन की विवेचना करें ?

Ans→ विदेशी इतिहासकारों का यह आरोप है कि भारतीय इतिहास के अध्ययन के लिए स्त्रोतों का सर्वथा अभाव है। परंतु विभिन्न ऐतिहासिक शोधों से अब यह भ्रांतियाँ दूर हो रही हैं और इतिहास संबंधी विचारों में नए - नए आयाम उद्भावित हो रहे हैं।

प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के स्त्रोतों की तुलना में सल्तनतकालीन इतिहास के अध्ययन के स्त्रोत पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि मुसलमान अपने इतिहास लेखन की कला में दक्ष थे। इस्लाम धर्म के प्रचार प्रसार के क्रम में अनेक अरब यात्री और धर्म प्रचारक भारत आए। इन लोगों ने भारत के विभिन्न भागों का विवरण प्रस्तुत किया है जो भौगोलिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन के लिए काफी महत्त्वपूर्ण है। फतहनामा तथा बिलादुरी की रचना फतूह - अल - बुलदान में सिंध की इतिहास की जानकारी मिलती है।

सल्तनत कालीन इतिहास के अध्ययन के स्त्रोतों को मुख्य रूप से दो भागों में बाँटा जा सकता है :-

(i) साहित्यिक स्त्रोत एवं पुरातात्त्विक स्त्रोत।

* साहित्यिक स्त्रोत ⇒ सामान्यत: साहित्यिक स्त्रोतों को 3 भागों में विभक्त किया जा सकता है —

* (i) सामान्य ऐतिहासिक रचनाएँ ⇒ इस श्रेणी की रचनाओं में मिनहाज-उस-सिराज की तबकाते-नासिरी प्रमुख है। इस पुस्तक में इल्तुतमिश काल की जानकारी मिलती है। इस ग्रंथ में पहली बार दिल्ली सल्तनत का क्रमबद्ध विवरण मिलता है। मिनहाज ने जहाँ अपना इतिहास समाप्त किया, बरनी ने वहीं से अपना इतिहास लेखन प्रारंभ किया।

* (ii) भारतीय इतिहास से विशेष रूप से संबद्ध ग्रंथ ⇒ ऐसे ग्रंथों में बरनी की तारिख-ए फीरोज शाही सर्वश्रेष्ठ है। बरनी ने इस ग्रंथ में दिल्ली सल्तनत के इतिहास का वर्णन इल्तुतमिश के बाद से आरंभ किया और फीरोजशाह तुगलक के आरंभिक 6 वर्षों तक किया है। बरनी की रचना सल्तनत काल के राजनीतिक, प्रशासनिक एवं आर्थिक इतिहास की जानकारी का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत है।

* (iii) नैतिक उपदेश-निहित ऐतिहासिक रचनाएँ → सल्तनत काल में ऐसी अनेक रचनाएँ हुई।

जिनमें विभिन्न शासकों की नीतियों एवं आदर्शों की चर्चा हुई है। बरनी के फतवा-ए-जहाँदारी में यह बात स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। इसीप्रकार शम्स-ए-शिराज अफीफ ने अपनी पुस्तक तारिख-ए-फीरोजसाही में फीरोज तुगलक के जीवन एवं कार्यों का वर्णन किया है।

★ (iv) प्रशस्तियाँ → सल्तनत काल में अनेक प्रशस्तियों की भी रचना की गई। यद्यपि इनमें अतिशयोक्तिपूर्ण विवरण है, तथापि इनका ऐतिहासिक महत्व बहुत अधिक है। ऐसी प्रशस्तियों में बदरुद्दीन रचित शाहनामा प्रमुख है, जिसमें मु० बिन तुगलक के कार्य कलापों का वर्णन है।

★ (v) ऐतिहासिक महत्व की साहित्यिक रचनाएँ → सल्तनत काल में अनेक वैसी साहित्यिक रचनाएँ हुई, जो पूर्णतः ऐतिहासिक नहीं होते हुए भी ऐतिहासिक महत्व की हैं। ऐसी रचनाओं में अमीर खुसरो की रचनाएँ प्रमुख हैं। अमीर खुसरो एक इतिहासकार से अधिक साहित्यकार के रूप में विख्यात हैं। चूँकि वे राजदरबार से लंबे समय तक संबद्ध रहे, इसीलिए उनकी रचनाओं में ऐतिहासिकता की झलक मिलती है। खुसरो ने 1289-1325 ई० के मध्य अनेक मसनवी लिखे।

खजाइन - उल - फुतूह में अलाउद्दीन खिलजी के शासन के आरंभिक वर्षों का विवरण है। इस रचना का महत्व इसलिए अधिक है, क्योंकि एक मात्र यही ग्रंथ अलाउद्दीन का समसामयिक विवरण प्रस्तुत करता है। खुसरो की अन्य रचनाओं में आशिका, नूह - सिपिहर और तुगलकनामा प्रमुख हैं। खुसरो की रचनाओं में बरनी की अपेक्षा अधिक विश्वसनीय तिथिक्रम मिलता है।

★ अन्य विविध ग्रंथ → इस साहित्यिक रचनाओं के अतिरिक्त सल्तनतकाल में अनेक अन्य ग्रंथ भी लिखे गये, जो सल्तनतकालीन इतिहास पर प्रकाश डालते हैं। ऐसे ग्रंथो में फखरुद्दीन की तारिख - ए - फखरुद्दीन फीरोजशाह तुगलक की आत्म कथा, फतुहात - ए - फीरोजशाही एवं ख्वाजा अब्दुलमलिक की पुस्तक फुतूह - अस - सलातीन प्रमुख हैं।

★ सूफी संतो की चरितावली → सल्तनतकाल में विभिन्न सूफी संतो की चरितावली भी लिखी गई जो इतिहास लेखन में सहायक हैं। अमीर हसन सिजजी ने फवादुल फवायद में तत्कालीन समाज का अच्छा चित्रण किया है। इसमें अलाउद्दीन खिलजी से लेकर ग्यासुद्दीन तुगलक के समय की स्थिति का वर्णन है।

A विदेशी यात्रियों के यात्रा वृतांत → प्राचीन काल से ही भारत का विदेशों से गहरा संपर्क रहा है और सल्तनतकाल में भी यह संपर्क बना रहा। इस कारण अनेक विदेशी विद्वान और यात्री भारत आए। इन लोगों ने अपने यात्रा वृतांतों में भारत का वर्णन किया है। आरंभिक विदेशी यात्रियों में अलबरुनी का नाम उल्लेखनीय है। उनकी सबसे विख्यात रचना किताबुलहिंद है। इससे 11 वीं सदी के भारतीय सामाजिक जीवन के बारे में जानकारी होती है। अलबरुनी के पश्चात इतालवी यात्री मार्कोपोलो और मोरक्को यात्री इब्नेबतुता भारत आए। मार्कोपोलो ने अपने यात्रा वृतांत में दक्षिण भारत की आर्थिक स्थिति का वर्णन किया है। इब्नेबतुता मु० बिन तुगलक के काल में भारत आया। उसने अपने पुस्तक रेहला में मु० बिन तुगलक कालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक जीवन का वर्णन किया है।

सल्तनतकाल में भारत आनेवाले अन्य प्रमुख यात्रियों में इतालवी यात्री निकोलीकोन्टी, अरब सौदागर अब्दुर रज्जाक, चीनी यात्री माहुआन, पुर्तगाली नाविक वासको डी-गामा आदि का उल्लेख किया जा सकता है। इन विदेशी यात्रियों के विवरणों से सल्तनतकालीन भारत की विभिन्न

पहलुओं की जानकारी मिलती है।

* अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथ → इन साहित्यिक स्त्रोतों के अतिरिक्त सल्तनत काल में अनेक ग्रंथों की रचना की गई जो इतिहास लेखन में सहायता पहुँचाते हैं। अफसानाएँ शाहान से लोदी शासकों के बारे में जानकारी मिलती है। हसन निजामी की पुस्तक ताजुलम आसिर से ऐबक एवं इल्तुतमिश के सैनिक अभियानों की जानकारी मिलती है।

सल्तनत काल में फारसी भाषा के अतिरिक्त संस्कृत, हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओं में भी अनेक ग्रंथों की रचना हुई। इनमें भी राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास की जानकारी मिलती है। संस्कृत में कल्हण ने राजतरंगिणी लिखी। जिससे मध्यकालीन कश्मीर के इतिहास पर प्रकाश पड़ता है। अवधी भाषा में लिखित मलिक मुहम्मद जायसी की पद्मावत से भी ऐतिहासिक झलक मिलती है। इनके अतिरिक्त हम्मीर महाकाव्य, पुरुष परीक्षा, रासमाला, शेख शुभोदेश आदि भी सल्तनत कालीन इतिहास की जानकारी के प्रमुख स्त्रोत है।

यद्यपि सल्तनत कालीन साहित्यिक स्त्रोतों की बहुत बड़ी संख्या है, तथापि अनेक ग्रंथ पूर्वाग्रह से ग्रसित तथा अनेक में तिथिक्रम का भी अभाव है। इन त्रुटियों

के बावजूद इनका महत्व कम नहीं है।

सरकारी एवं व्यक्तिगत पत्र व्यवहार भी इतिहास जानने का एक अच्छा साधन है। महमूद गवा का रियाज-उल-इंशा से भारतीय परिस्थितियों की जानकारी मिलती है।

☆ पुरातात्विक स्त्रोत → सल्तनत कालीन इतिहास के अध्ययन में पुरातात्विक स्त्रोतों की उपेक्षा नहीं की जा सकती। इस समय के भग्नावशेषों को देखकर तत्कालीन कलात्मक प्रगति एवं राज्य की समृद्धि का अंदाजा मिलता है। इस समय अनेक महत्वपूर्ण इमारतें, जैसे- कुबत-उल-इस्लाम, कुतुबमीनार, अलाई दरवाजा, फीरोजशाह कोटला आदि कला की प्रगति दर्शाती है। सल्तनतकालीन सिक्के भी इतिहास की जानकारी के प्रमुख स्त्रोत है।

इस प्रकार उपरोक्त स्त्रोतों के आधार पर हम सल्तनत कालीन इतिहास का प्रमाणिक अध्ययन कर सकते है।

———o———